International Journal of Applied Research 2015; 1(5): 136-138

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
IJAR 2015; 1(5): 136-138
www.allresearchjournal.com
Received: 13-03-2015
Accepted: 09-04-2015

वन्दना देवी
शोध कर्त्री संस्कृत विभाग हि०प्र० विष्वविद्यालय षिमला–5

Correspondence:
वन्दना देवी
शोध कर्त्री संस्कृत विभाग हि०प्र० विष्वविद्यालय षिमला–5

रामायण में चिकित्सा सम्बन्धी वनस्पतियाँ

वन्दना देवी

रामायणकालीन वनस्पतियाँ न केवल मानव की वस्त्र, आवास–निवास आदि समस्याओं को सुलझाने में सहायक होती थीं अपितु विभिन्न प्रकार के शारीरिक रोगों के निवारण के लिए भी उनका प्रयोग किया जाता था। रामायण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि न केवल अरण्यवासियों अपितु नगर एवं जनपदों में रहने वाले लोगों का उपचार भी कुषल वैद्य वनों में उगने वाली जड़ी–बूटियों से विभिन्न प्रकार की रोग निवारक ओषधियों का निर्माण करते थे।

रामायण युग में चिकित्साषास्त्र अपनी पूर्ण समुन्नत स्थिति में था। रामायण में रोग निवारक वैद्यों का वर्णन मिलता है। राजा दषरथ की राजधानी चिकित्सा में कुषल वैद्यों से परिपूर्ण थी। कोपभवन में कुपित कैकेयी को अस्वस्थ जानकर दषरथ ने कहा था कि सब ओर से सन्तुष्ट तथा चिकित्सा क्षेत्र में निपुण वैद्य तुम्हारे रोग का निवारण कर देगें।[1] समाज में वैद्यों को आदरणीय स्थान प्राप्त था। देवताओं, पितरों और गुरुजनों के समान पूजनीय वैद्यों का सम्मान किया जाता था[2] और उन्हें सहृदयता, मधुरता तथा दान से सनाथ किया जाता था :

''कष्चिद् वृद्धांष्च बालांष्च वैद्यान् मुख्यांष्च राघव।
दानेन मनसा वाचा त्रिभिरेतैर्बुभूषसे।।''[3]

ये प्रमाण इस बात के द्योतक है कि राजा लोग वैद्यों का प्रेम–पूर्वक मधुर वचनों तथा दानादि से सम्मान करते थे। राजा की यात्रा के समय दरबार के वैद्य भी उनके साथ जाते थे। भरत की वन–यात्रा के समय कुषल वैद्य उनके साथ गए थे।[4] भरत की इस यात्रा में चलने वालों में वैद्यों का उल्लेख, वैद्यों के सामाजिक सम्मान तथा उनके दायित्व की ओर स्पष्ट संकेत करता है। रामायण में चिकित्सकों के लिए 'वैद्य'[5] शब्द का प्रयोग इसी बात का परिचायक है कि वे आयुर्वेद के पूर्ण ज्ञाता हुआ करते थे। तदुपरान्त वे उनसे रोगों का शमन करने वाली ओषधियों का निर्माण करते थे। इन्द्रजित् द्वारा संग्राम में वानर सेना तथा लक्ष्मण सहित राम के मूर्च्छित होने पर हनुमान ओषधियों की खोज के लिए हिमालय के ऋषभ और कैलाष पर्वत पर गए थे।[6] विषेषकर वानर ओषधियों के प्राप्ति स्थान से पूर्णतया परिचित थे। इन्द्रजित् द्वारा राम लक्ष्मण को नागपाष में बाँधने तथा उनके मूर्च्छित होने पर सुग्रीव के श्वसुर सुषेण ने सम्पाति और पनस वानरों को क्षीर समुद्र तट पर स्थित चन्द्र तथा द्रोण पर्वतों पर विद्यमान स्वास्थ्यकारी श्रेष्ठ ओषधियों को लाने का परामर्ष दिया था।[7] युद्ध में घायल सभी लोगों को स्वस्थ करने, मूर्च्छित तथा घायल सभी लोगों को स्वस्थ करने वाली ओषधियों के उद्भव स्थान हिमालय पर्वत की चोटियों को बताया गया है।[8] न केवल वैद्य ही अपितु राजकीय परिवार की महिलाओं को भी स्वास्थ्यवर्द्धक ओषधियों का पूर्ण ज्ञान था। वनगमन के समय माता कौषल्या ने अपने प्रियपुत्र राम के हाथ में सदैव उनकी रक्षार्थ विषेषमन्त्रोच्चारण के पष्चात् विषल्यकरणी नामक ओषधि बांधी थी–

''औषधीं च सुसिद्धार्था विषल्यकरणीं शुभाम्।
चकार रक्षां कौसल्या मन्त्रैरभिजजाप च।।''[9]

राम और लक्ष्मण भी इन वन ओषधियों से परिचित थे। वाल्मीकि आश्रम में उन्होंने रक्त–विकार नाषक तथा बिगड़े हुए सभी अङ्गों को ठीक करने वाले गजकन्द नामक कन्द विषेष का प्रयोग खाद्य सामग्री के रूप में किया था।[10] इन्द्रजित् के वध करने पर बाणों से घायल लक्ष्मण, विभीषण तथा अन्य रीछ एवं वानर सैनिकों का राम ने कुषल तथा महाप्रज्ञ वैद्य सुषेण से उपचार करने का निवेदन किया था– ''यथा भवति सुस्वस्थस्तथा त्वं समुपचार।'' सुषेण ने न केवल लक्ष्मण, विभीषण के ही बाण निकाले अपितु सभी घायल वानरों की चिकित्सा करके उन्हें भी स्वस्थ कर दिया था।[11] इसके अतिरिक्त राजा दषरथ के दिवंगत होने पर प्रायः उन्हें जगाने वाली नारियों ने उनके हृदय तथा मूल भाग की नाड़ियों का भली–भाँति परीक्षण करने के पश्चात् उन्हें मृत घोषित किया था।[12] इन प्रमाणों से अभिलक्षित होता है कि न केवल वैद्य ही अपितु अन्य नर–नारी भी ओषधियों तथा स्वास्थ्य के सामान्य नियमों का ज्ञान रखते थे तथा वनज जड़ी–बूटियों में इतनी शक्ति होती थी कि वे मानव की हर प्रकार के भय, आघात तथा विघात से रक्षा करती थीं।

विष्वमित्र ने राम को जो बला अतिबला नामक विद्याएँ दी थीं उनमें शारीरिक थकावट, ज्वर, शारीरिक विकार तथा भूख प्यास आदि के कष्ट को दूर करने की शक्ति विद्यमान थी–

"न श्रमो न ज्वरो वा ते न रूपस्य विपर्ययः।"[13]
"क्षुत्पिपासे न ते राम भविष्येते नरोत्तम।"[14]

इन उद्धरणों से प्रतीत होता है कि उन विद्याओं के साथ–साथ गुरु ने उन्हें आयुर्वेदिक शक्तिसम्पन्न पुष्टिकारक कोई ओषधि भी दी होगी। राज्याभिषेक के समय भी सब प्रकार की ओषधियाँ प्रयोग में लाई जाती थीं। राम के युवराज पद पर अभिषेक की तैयारियों का आदेष देते समय दषरथ ने अन्य सभी वस्तुओं के संग्रह के साथ–साथ ''सर्वौषधीरपि'' शब्द का प्रयोग करके ओषधियाँ एकत्र करने का भी आदेष दिया था।[15] ''सर्वौषधिरसैष्चापि''[16], आदि शब्द सर्वौषधी संग्रहण के तथ्य की पुष्टि करते हैं। राज्याभिषेक के समय सुगन्धियों के साथ–साथ ओषधियाँ भी मिश्रित की जाती थीं। सुग्रीव का राजतिलक औषधि मिश्रित जल से सम्पन्न हुआ था।[17] रामायण में एक स्थल पर ऐसा वर्णन मिलता है कि अपरपर्वत नामक जनपद में एक ऐसी नदी थी जो भीतर पड़ी वस्तु को षिलास्वरूप बना देती थी। [18] सम्भव है कि उस नदी में वनस्पतियों के कुछ ऐसे तत्त्व मिले हों जिनके कारण उस जल में वस्तु को पत्थर बनाने की सामर्थ्य उत्पन्न हो गई हो। एक अन्य शल्यकर्षण नामक देष का भी उल्लेख मिलता है वहाँ पर शरीर में चुभे हुए काँटे निकालने वाली शल्यकर्षणम् नामक ओषधि उत्पन्न होती थी।[19]

ओषधियों के उत्पत्ति स्थान वन तथा पर्वत होते थे। चित्रकूट[20], हिमालय[21], महेन्द्र[22], चन्द्र तथा द्रोण [23], कैलास तथा ऋषभ [24] आदि पर्वतों पर सब प्रकार के रोगों को दूर करने वाली ओषधियाँ प्राप्त होती थीं। इन ओषधियों का संग्रह करके उन्हें वानरराज सुग्रीव को अर्पित किया गया था।[25] इन ओषधियों का प्रयोग विषादि के प्रभाव को दूर करने के लिए भी किया जाता था। हनुमान के महेन्द्र पर्वत पर विषघातक ओषधियाँ देखी थी।[26] ये ओषधियाँ अधिकाँषतः प्रकाषमान होती थी। यही कारण है कि वाल्मीकि ने पर्वतों पर उगी हुई ओषधियों की तुलना उद्भासित होने वाली अग्नि–षिखा से की है।[27] हिमालय के ऋषभ तथा कैलास षिखर पर ओषधियाँ अत्यधिक चमक रही थी, कुषल वैद्य जाम्बवान् ने हनुमान् को जिन ओषधियों को लाने का आदेष दिया था। उनकी पहचान सभी ओषधियों की चमक के कारण कठिन हो गई थी। इसलिए हनुमान् सम्पूर्ण पर्वत उठा लाए थे।[28] इन ओषधियों में अदृष्य होने की भी शक्ति विद्यमान थी। जब हनुमान् हिमाचल पर्वत पर ओषधियाँ लेने गए थे तो सभी महौषधियाँ यह जानकर कि कोई उन्हें लेने आया हैं, अदृष्य हो गई थी–

"महौषध्यस्ततः सर्वास्तस्मिन् पर्वतसत्तमे,
विज्ञायार्थिनमायान्तं ततो जग्मुरदर्षनम्।।"[29]

जब हनुमान् पूरा पर्वत षिखर उखाड़ कर वापिस विभीषण के पास पहुँचे तो वे सभी ओषधियाँ पुनः चमकने लगी और इन्द्रजित् द्वारा घायल राम और लक्ष्मण इन महौषधियों की सुगन्ध से तत्काल ही स्वस्थ हो गए थे।[30] मूर्च्छा को दूर करने के लिए कमल, उत्पलादि के रस को जल में मिलाकर मुख पर उसका छिड़काव किया जाता था। जब इन्द्रजित् ने मायावी सीता को मारा तो पत्नी की मृत्यु की बात सुनकर राम मूर्च्छित हो गए थे। उनकी मूर्च्छा को दूर करने के लिए कमल और उत्पल की सुगन्ध से युक्त जल का छिड़काव किया गया था।[31]

रामायण में अपनी प्रभा से दसों दिषाओं को अवलोकित करने में समर्थ चार वनज महौषधियों का विषेष वर्णन उपलब्ध है–

"मृतसंजीवनीं चैव विषल्यकरणीमपि।
सुवर्णकरणीं चैव संधानीं च महौषधीम्।"[32]

मृतसञ्जीवनी

मृतसञ्जीवनी (मृतः प्रायः को जीवन प्रदान करने वाली) जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होता है कि यह वनौषध मृत प्रायः या संज्ञा शून्य प्राणी को भी जीवन प्रदान करने में समर्थ थी। रामायण में इसके लिए दूसरा नाम सञ्जीवकरणी [33] भी मिलता है। हिमालय पर्वत पर ऋषभ तथा कैलास के बीच में एक ओषधियों के पर्वत पर इसके उगने का वर्णन मिलता है। यह अत्यधिक चमकीली होती है। इसे जाम्बवान् ने हनुमान को लंका युद्ध के समय राम–लक्ष्मण तथाा वानर सैनिकों की मूर्च्छा या उपचार हेतु इसी बूटी को लाने के लिए कहा था। [34] मृत संजीवनी सूंघते ही उनकी मूर्च्छा सहसा दूर हो गई थी। [35] लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर सुषेण ने हनुमान को महादेव पर्वत पर लक्ष्मण के जीवन की रक्षा के लिए सञ्जीवकरणी बूटी लाने के लिए भेजा था।[36] सुषेण ने उस ओषधि को कूट–पीस कर लक्ष्मण को सुंघाया तथा उसे सूंघते ही वह सचेतन हो गया था।[37] इन्द्रजित् के बाणों द्वारा जब राम और लक्ष्मण घायल किये थे तो उस समय सुषेण ने सुग्रीव को संजीवकरणी ओषधि के विषय में बताया था कि बृहस्पति ने मन्त्रयुक्त विद्याओं और दिव्यौषधियों द्वारा देवासुर–महायुद्ध में घायल देवताओं को चिकित्सा की थी। उस समय ब्रह्मा ने ही संजीवकरणी ओषधि का निर्माण किया था और क्षीर–सागर मन्थन के समय सागर तट पर स्थित चन्द्र तथा द्रोण पर्वत पर इस ओषधि का प्रतिष्ठान किया गया था,[38] इन प्रमाणों से प्रमाणित होता है कि किसी भी मूर्च्छित या युद्ध में घायल होने के कारण संज्ञाषून्य व्यक्ति की अचेतनता को दूर करने के लिए इस ओषधि का प्रयोग किया जाता था।

विषल्यकरणी

विषल्यकरणी नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि इस ओषधि से शरीर में धसे हुए शल्य (बाण) निकल जाते थे तथा पीड़ा दूर होने के साथ–साथ व्रण भी पूरित हो जाते थे। यह ओषधि भी ब्रह्मा द्वारा निर्मित ओषधियों में से एक थी।[39] पूर्वकाल में देवासुर–संग्राम में बृहस्पति ने अस्त्र–षस्त्रों से पीड़ित देवताओं की रक्षा तथा चिकित्सा इसी ओषधि द्वारा की थी।[41] हनुमान् द्वारा लाई गई इस महौषधि से घायल राम, लक्ष्मण तथा वानरों के शरीर के समस्त बाण बाहर निकल गए थे तथा पीड़ा समाप्त होने के साथ–साथ उनके घाव भी भर गए थे।[41] इन्द्रजित् वध के पष्चात् जब लक्ष्मण विभीषण तथा अन्य वानर राम के पास गए तो उनकी अवस्था देखकर राम ने वैद्य सुषेण से उनका उपचार करने का निवेदन किया। सुषेण ने उत्तम ओषधि लक्ष्मण की नाक में लगाई। उस के सूंघते ही लक्ष्मण के शरीर से बाण निकल गए पीड़ा दूर होने के साथ–साथ इन के शरीर के घाव भी भर गए। इस प्रकार चिकित्सा करके सुषेण ने न केवल लक्ष्मण को ही अपितु सभी घायल वानरों को जीवित कर दिया था।[42]

युद्ध में रावण की शक्ति द्वारा लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर महोदय गिरि के षिखर पर ओषधियों के न पहचानने के कारण हनुमान् यह सोचने लगे कि–

"अगृह्य यदि गच्छामि विषल्यकरणीमहम्।
कालात्ययेन दोषः स्याद् वैक्लव्यं च महद् भवेत्।।"[43]

अर्थात् यदि बिना विषल्यकरणी लिए वापिस जाऊँगा तो महान् दोष की सम्भावना हो सकती है। इस प्रमाण से तत्कालीन चिकित्सा में विषल्यकरणी ओषधि का महत्त्व स्वतः ही सिद्ध हो जाता है। हनुमान् सम्पूर्ण पर्वत षिखर ही उखाड़ लाए। सुषेण ने ओषधि जैसे ही पीस कर लक्ष्मण को सुंघाई वैसे ही शरीर में धँसे हुए समस्त बाण बाहर निकल आए थे।[44] इस बूटी का प्रयोग शरीर में धँसे हुए शर, काँटे इत्यादि निकालने के लिए भी किया जाता था। रामायण काल में विषल्यकरणी ओषधि की इतनी महत्ता थी कि जिस प्रदेष में इस की उत्पत्ति का बाहुल्य था उस का नाम ही 'षल्यकर्षणम्' प्रदेष पड़ गया था।[45] इस ओषधि को जीवन रक्षक माना जाता था। यही कारण था कि माताएँ मंत्र से शुद्ध करके इसे सन्तान की भुजाओं में भी बांधा करती थी।[46]

सुवर्णकरणी

रंग को सोने की भाँति चमकीला मनोहर तथा सुन्दर बनाने वाली सुवर्णकरणी नामक महौषधि के लिए रामायण में सावर्ण्यकरणी (षरीर में पहले सी रंगत लाने वाली) नाम का भी प्रयोग किया गया है।[47] यह ओषधि भी वनों तथा पर्वतों पर ही उगती थी। हिमालय आदि पर्वत को यह ओषधि अपनी अद्वितीय प्रभा से प्रकाषित करती थी।[48] इस ओषधि के प्रभाव से घायल राजकुमार तथा वानरों ने अपनी खोई हुई क्रान्ति को पुनः प्राप्त कर लिया था और वे प्रातः काल सोकर उठे हुए प्राणियों की भाँति बिल्कुल नीरोग तथा स्फूर्तिवान् हो गए थे।[49]

संधानी

संधानी का अर्थ है कि टूटे या कटे हुए अङ्गों को जोड़ने वाली विषेष ओषधि/रामायण के अनुसार इस ओषधि का प्राप्य स्थान भी ऋषभका तथा कैलास षिखर ही माने गए हैं।[50] दषरथ कुमारों को प्राण देने के लिए ओषधियों का ज्ञान रखने वाले जाम्बवान् ने उपर्युक्त तीन ओषधियों के साथ–साथ युद्ध में अङ्ग–भङ्ग होने के कारण संधानी को भी आवष्यक माना था।[51] इन्द्रजित् के साथ युद्ध करते हुए वानरों के अंग क्षत–विक्षत हो गये थे तथा कइयों के हाथ, पैर, पूँछ, जांघ, अंगुली, ग्रीवा इत्यादि अंग कट गए थे।[52] सन्धानी के कारण सभी वानरों के अंग जुड़ गए थे और समस्त वानर नीरोग हो गए थे।[53]

रामायण के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि युद्ध के समय ये चारों ओषधियां एक साथ प्रयोग में लाई जाती थीं, क्योंकि युद्ध में घायल व्यक्ति के अंगों में बाण धंसने के कारण घाव पड़ जाते थे। अत्यधिक पीड़ा के कारण सैनिकों की शारीरिक कान्ति पीली पड़ जाती थी। युद्ध में अङ्ग भी टूट तथा कट जाते थे। पीड़ा सहन न कर पाने के कारण सैनिक मूर्च्छित हो जाते थे। इस प्रकार इन चारों अवस्थाओं में उपचार चारों महौषधियों द्वारा सम्भव था। इन ओषधियों के अतिरिक्त पाप निवर्तिनी सोमलता का विवरण उपलब्ध होता है।[54]

वाल्मीकि ने ''अभिषुतोऽनघः''—कहकर सोमलता के रस को पाप का नाषक माना है। इसका प्रयोग यज्ञ में भी किया जाता था।[55] एक स्थल पर वाल्मीकि ने भरत द्वारा भोगे गए राज्य की तुलना भुक्तावषिष्ट यज्ञसम्बन्धी सोमरस से की है।[56] ऐसा प्रतीत होता है कि सोमलता को पीस कर उसका रस निकाला जाता था। सोमयाग भी उस समय प्रचलित थे। रावण ऋषियों के अभिमंत्रित तथा संरक्षित सोमरस को नष्ट कर देता था।[57] इसके अतिरिक्त रामायण में कई स्थानों पर ''सर्वोषधी'' शब्द का प्रयोग किया गया है।[58] जो इस बात का द्योतक है कि उस समय इन प्रमुख ओषधियों के अतिरिक्त अन्य वनौषधियां भी प्रयोग लाई जाती थी, युद्ध में प्रस्थान करने से पूर्व त्रिषिरा, अतिकाय, महोदर, देवान्तक, नरान्तक और महापार्ष्व इन छः महाबली राक्षसों ने सर्वौषधी का प्रयोग किया था।[59]

संभव है कि उस समय वनस्पतियों से किसी प्रकार की ऐन्टीसैप्टिक ओषधि भी बनाई जाती हो जिससे घाव का विषादि शरीर में न फैलता हो।

इन प्रमाणों से विदित होता है कि वनस्पतियों का मानव जीवन की शारीरिक चिकित्सा के क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान रहा था। शारीरिक पीड़ा से बचने के लिए कुषल चिकित्सक विविध प्रकार की वनस्पतियों से ओषधियों का निर्माण करते थे तथा लोगों का पता लगाकर उसके निदान के लिए उपयुक्त ओषधि दी जाती थी।

उपर्युक्त विवेचन से विदित है कि रामायण युग में वनस्पतियों की चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण देन रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि यदि उस युग में वनस्पतियों को मानव जीवन से निकाल दिया जाता तो जीवन असम्भव हो जाता। वनस्पतिज सम्पति ही मानवीय जीवन का प्रमुख आश्रय था।

संदर्भ

1. अयोध्या काण्ड 10.30
2. वही 100.13
3. वही 100.60
4. वही 83.14
5. वही 10.30, 84.14, 100.13,60
6. युद्ध काण्ड 74.61—65
7. वही 50.23—32
8. वही 74.29—32
9. अयोध्या काण्ड 25.38
10. वही 56.22—28
11. युद्ध काण्ड 91.11,12,20—29
12. अयोध्या काण्ड 65.13—14
13. बाल काण्ड 22.13
14. वही 22.18
15. अयोध्या काण्ड 3.8
16. युद्ध काण्ड 128.63
17. किष्किन्धा काण्ड 26.6,24
18. अयोध्या काण्ड 71.3
19. वही 71.3
20. वही 94.21
21. किष्किन्धा काण्ड 37.31—35
22. सुन्दर काण्ड 1.21
23. युद्ध काण्ड 50.31—32
24. वही 74.61—65
25. किष्किन्धा काण्ड 37.31—35
26. सुन्दर काण्ड 1.21
27. अयोध्या काण्ड 94.21
28. युद्ध काण्ड 74.30—35, 36—77
29. वही 74.64
30. वही 74.74
31. वही 83.12
32. वही 74.33
33. युद्ध काण्ड 101.32
34. वही 74.25, 30—34
35. वही 74.73—74
36. वही 101.30—32
37. वही 101.30—45
38. वही 50.17, 26—32
39. वही 50.30
40. वही 50.26—28
41. वही 74.73—74
42. वही 91.12, 22—26
43. वही 101.36
44. वही 101.37—45
45. अयोध्या काण्ड 71.3, 25.38
46. युद्ध काण्ड 101.32
47. वही 74.30—33, 101.31
48. वही 74.74
49. वही 74.30, 101.30—32
50. वही 74.33—74, 101.32
51. वही 73.61, 66 74.73, 74
52. बाल काण्ड 14.6
53. वही 14.6
54. अयोध्या काण्ड 61.18
55. अरण्य काण्ड 32.19
56. युद्ध काण्ड 74.31, 61
57. वही 69.16—18, 22